प्रारंभिक परीक्षा

फिन वीवर(Finn Weaver)

संदर्भ

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और बाघ अभयारण्य के सर्वेक्षण में शोधकर्ताओं को घास के मैदानों में रहने वाले पक्षियों की प्रजातियों (जिनमें बंगाल फ्लोरिकन, लुप्तप्राय फिन्स वीवर और स्वैम्प ग्रास बैबलर शामिल हैं) में काफी विविधता मिली।

फिन वीवर के बारे में -

- **संरक्षण स्थिति**: IUCN रेड लिस्ट में **असुरक्षित**
- **स्थानीय नाम**: असम में **तुकुरा चोराई**।
- **निवास स्थान**: उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश के **तराई घास के मैदान**।
- **मुख्य विशेषताएं**: पेड़ों के ऊपर घोंसला बनाने वाला मास्टर।
    - जटिल बुने हुए घोंसलों के लिए जाना जाता है।

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान (KNP) के बारे में -

- **स्थान**: असम के गोलाघाट और नागांव जिले, ब्रह्मपुत्र नदी और कार्बी (मिकिर) पहाड़ियों के बीच।
- यह एक **राष्ट्रीय उद्यान, बाघ अभयारण्य, महत्वपूर्ण पक्षी क्षेत्र (आईबीए)** और **यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (1985)** है।
- यहां भारतीय **एक सींग वाले गैंडों** की सबसे बड़ी आबादी है (2022 की जनगणना के अनुसार 2,613)।
- यह **ऑस्ट्रेलिया और इंडो-एशियाई फ्लाईवे** के जंक्शन पर स्थित है।
- ब्रह्मपुत्र घाटी के बाढ़ क्षेत्र का सबसे बड़ा अप्रभावित क्षेत्र है।
- **वनस्पति**: यह हाथी घास, रतन बेंत और जलीय पौधों जैसे जलकुंभी के लिए प्रसिद्ध है।
- **जीव-जंतु**: बड़ा एक सींग वाला गैंडा, हूलॉक गिब्बन, बाघ, तेंदुआ, भारतीय हाथी, सुस्त भालू, जंगली भैंसा, दलदली हिरण।

हाल ही में खबरों में

➔ पल्लास फिश ईगल (मंगोलियाई लुप्तप्राय पक्षी), जिसका नाम इडर है, 2020 से प्रजनन के मौसम के लिए असम के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और टाइगर रिजर्व में एक ही स्थान पर उड़ान भरता रहता है।

स्रोत: The Hindu

GLP-1 दवाएं

संदर्भ

लोटे बिजरे नुडसन ने **GLP**-1 दवाओं के सह-आविष्कार के लिए लास्कर पुरस्कार जीता, जिसने मधुमेह और मोटापे के उपचार में क्रांति ला दी।

GLP-1 दवाएं क्या हैं?

- **GLP-1 (ग्लूकागन-लाइक पेप्टाइड-1)** एक प्राकृतिक हार्मोन (इंक्रीटिन) है जो खाने के बाद निकलता है।
- **यह रक्त शर्करा, वसा चयापचय को विनियमित करने और भूख को नियंत्रित करने में मदद करता है।**
- **GLP-1 रिसेप्टर एगोनिस्ट** सिंथेटिक दवाएं हैं जो **GLP**-1 की नकल करती हैं, तथा शरीर में समान प्रतिक्रियाओं को सक्रिय करती हैं।
- अधिकांशतः **इंजेक्शन** के माध्यम से दिया जाता है, हालांकि मौखिक रूप भी विकसित किए जा रहे हैं।
- लोकप्रिय **GLP**-1 दवाओं में शामिल हैं:
    - सेमाग्लूटाइड (नोवो नॉर्डिस्क द्वारा)
    - तिरज़ेपाटाइड (एली लिली द्वारा)
- दोनों अब भारत में उपलब्ध हैं और मधुमेह तथा मोटापे के उपचार में महत्वपूर्ण सुधार ला रहे हैं।

GLP-1 दवाएं कैसे काम करती हैं?

- रक्त शर्करा के उच्च स्तर पर इंसुलिन स्राव को उत्तेजित करती हैं।
- ग्लूकागन स्राव को रोकती हैं, जिससे यकृत में ग्लूकोज का उत्पादन कम होता है।
- गैस्ट्रिक खाली होने की प्रक्रिया को धीमा करती हैं, जिससे शर्करा के स्तर में वृद्धि को रोका जा सकता है।
- भूख को कम करती हैं, जिससे भोजन का सेवन कम हो जाता है।
- टिर्जेपेटाइड दोहरे प्रभाव के लिए जीआईपी हार्मोन की नकल भी करता है।

उत्पत्ति और विकास -

- **इन्क्रीटिन का उल्लेख सर्वप्रथम 1906 में किया गया था, लेकिन 1921 में इंसुलिन की खोज के बाद इस पर ध्यान दिया गया।**
- **GLP-1 हार्मोन 1986 में पृथक किया गया था।**
- 1990 के दशक में प्रारंभिक शोध में इसकी क्षमता दिखाई दी, लेकिन हार्मोन अस्थिर था।
- **नोवो नॉर्डिस्क ने विकसित किया:**
    - लिराग्लूटाइड (दैनिक इंजेक्शन)
    - सेमाग्लूटाइड (साप्ताहिक खुराक), खुराक नियंत्रण के साथ बेहतर वजन घटाने और कम दुष्प्रभाव प्रदान करता है।

स्रोत: IndianExpress

मछलीपट्टनम

संदर्भ

मछलीपट्टनम ग्रीनफील्ड बंदरगाह का लगभग 48% कार्य पूरा हो चुका है, तथा 2026 के अंत तक इसका परिचालन शुरू होने की उम्मीद है।

मछलीपट्टनम (मसुलीपट्टनम) के बारे में -

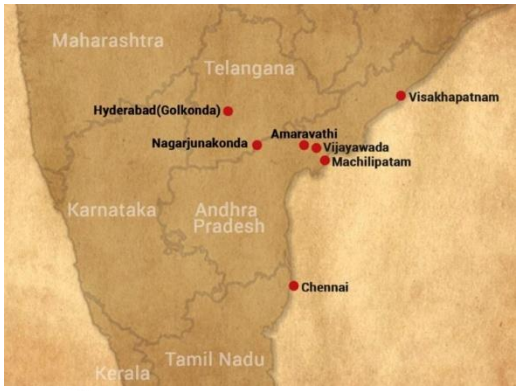

- आंध्र प्रदेश के **कृष्णा जिले** का तटीय शहर।
- बंगाल की खाड़ी के किनारे **कृष्णा नदी के मुहाने** पर स्थित है।
- **सातवाहन युग (प्रथम शताब्दी ई.)** के दौरान फला-फूला।
- **गोलकुंडा सल्तनत काल**: फारस, यूरोप और दक्षिण पूर्व एशिया में मलमल और वस्त्र निर्यात के लिए प्रमुखता प्राप्त की।
- **यूरोपीय व्यापारिक केंद्र**:
    - 17वीं शताब्दी में डच, ब्रिटिश और फ्रांसीसी लोगों ने कारखाने स्थापित किए।

स्रोत: TheHindu

टिड्डियों का प्रकोप

संदर्भ

वैज्ञानिकों ने एक **फेरोमोन की पहचान की है जो टिड्डियों के झुंड बनाने की प्रक्रिया को सक्रिय करता है**, और उसे **अवरोधित करने की एक विधि** भी खोज ली है। यह खोज **टिड्डी प्रकोपों को नियंत्रित करने में एक महत्वपूर्ण सफलता** प्रदान करती है।

टिड्डियों के संक्रमण के बारे में -

- **टिड्डियाँ क्या हैं?** टिड्डियाँ वे टिड्डे होते हैं जो झुंड में बदल सकते हैं, बड़े समूह बना सकते हैं जो पलायन करते हैं और फसलों को नष्ट कर देते हैं।
- **झुंड बनाने का उत्प्रेरक**: वैज्ञानिकों ने **4-विनाइलानिसोल (4VA)** नामक एक विशिष्ट फेरोमोन की पहचान की है, जो अकेले टिड्डियों को इकट्ठा होने और झुंड बनाने का कारण बनता है।
- **संक्रमण का प्रभाव**:
  - एक टिड्डी दल एक दिन में 35,000 लोगों के बराबर भोजन खा सकता है।
  - झुंड फसलों, चारागाहों और वनस्पतियों को नष्ट कर देते हैं, जिससे खाद्य असुरक्षा और आर्थिक नुकसान होता है।
  - अफ्रीका, मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया के देश विशेष रूप से असुरक्षित हैं।
- **अनुकूल परिस्थितियाँ**:
  - **भारी बारिश, चक्रवात और नम मिट्टी** के कारण टिड्डियों का प्रजनन बढ़ जाता है।
  - जलवायु परिवर्तन से ऐसी स्थितियों की आवृत्ति बढ़ सकती है।

टिड्डियों के संक्रमण को कैसे रोकें या नियंत्रित करें -

- **फेरोमोन अवरोध (नवीनतम खोज)**:
  - **वैज्ञानिकों ने एक ऐसा अणु खोजा है जो 4VA फेरोमोन को अवरुद्ध करता है, तथा संभवतः टिड्डियों के झुंड के निर्माण को रोकता है।**
  - भविष्य में लक्षित, पर्यावरण-अनुकूल कीट नियंत्रण के द्वार खुलेंगे।
- **रासायनिक छिड़काव**:
  - प्रकोप के दौरान ऑर्गेनोफॉस्फेट कीटनाशकों का हवाई या ज़मीनी छिड़काव आमतौर पर किया जाता है।
  - झुंड बनाने से पहले प्रारंभिक हॉपर चरण में प्रभावी।
- **जैविक नियंत्रण**:
  - मेटारिज़ियम एनिसोप्लाई जैसे जैव कीटनाशकों का उपयोग, जो एक कवक है जो टिड्डियों को संक्रमित करता है और मारता है।
  - पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित विकल्प।
- **निगरानी एवं पूर्व चेतावनी**:
  - उपग्रहों, ड्रोनों और क्षेत्रीय गश्ती का उपयोग करके वास्तविक समय पर निगरानी।
  - एफएओ की डेजर्ट लोकस्ट वॉच जैसी प्रणालियां प्रभावित देशों को अलर्ट जारी करती हैं।
- **अंडा स्थल प्रबंधन**:
  - प्रजनन स्थलों की मिट्टी को नष्ट करने या उसमें छेड़छाड़ करने से टिड्डियों को परिपक्व होने से रोका जा सकता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय समन्वय**:
  - चूंकि झुंड सीमा पार करते हैं, इसलिए प्रभावी नियंत्रण के लिए क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता होती है (उदाहरण के लिए, भारत, पाकिस्तान और अफ्रीकी देशों के बीच)।

स्रोत: TheHindu

हरियाणा और गोवा के लिए नए राज्यपाल नियुक्त

संदर्भ

राष्ट्रपति ने नए राज्यपालों और उपराज्यपालों की नियुक्ति की- कविंदर गुप्ता को लद्दाख का उपराज्यपाल, अशोक गजपति राजू को गोवा का राज्यपाल, अशीम कुमार घोष को हरियाणा का राज्यपाल नियुक्त किया गया।

संवैधानिक प्रावधान (राज्यपाल पद) -

- **अनुच्छेद 153**: प्रत्येक राज्य के लिए एक राज्यपाल होगा। हालाँकि, एक ही व्यक्ति को दो या अधिक राज्यों का राज्यपाल नियुक्त किया जा सकता है।
- **अनुच्छेद 154**: राज्य की कार्यपालिका शक्ति राज्यपाल में निहित है।
- **अनुच्छेद 155**: राज्यपाल की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।
- **अनुच्छेद 156**: राज्यपाल राष्ट्रपति की इच्छा पर पद धारण करता है, उसका कोई निश्चित कार्यकाल नहीं होता।
- **अनुच्छेद 157**: राज्यपाल के रूप में नियुक्ति के लिए योग्यताएं।
- **अनुच्छेद 158**: राज्यपाल के पद की शर्तें।

राज्यपाल के लिए पात्रता मानदंड -

- भारत का नागरिक होना चाहिए।
- 35 वर्ष की आयु पूरी कर ली हो।
- किसी लाभ के पद पर नहीं होना चाहिए।
- संसद या किसी राज्य विधानमंडल का सदस्य नहीं हो सकता।
- लोकसभा के सदस्य के रूप में चुनाव के लिए पात्र होना चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय की प्रमुख टिप्पणियाँ -

- राज्यपाल का पद महज औपचारिक नहीं है; राज्यपाल एक संवैधानिक प्रमुख है और उसे केंद्र और राज्य के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करना चाहिए।
- **बी.पी. सिंघल बनाम भारत संघ (2010)** में, सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया:
    - राष्ट्रपति बिना कारण बताए राज्यपाल को हटा सकते हैं, लेकिन इस शक्ति का प्रयोग मनमाने ढंग से नहीं किया जा सकता।
    - केवल राजनीतिक कारण ही निष्कासन का वैध आधार नहीं हैं।
- सुप्रीम कोर्ट ने संवैधानिक संतुलन बनाए रखने के लिए राज्यपाल की गैर-राजनीतिक और तटस्थ भूमिका पर जोर दिया।

स्रोत: The Hindu

डेनमार्क ने डीपफेक के खिलाफ विधेयक प्रस्तावित किया

संदर्भ

डेनमार्क ने डीपफेक के बढ़ते खतरे से निपटने के लिए अपने कॉपीराइट कानून में संशोधन करने हेतु एक विधेयक पेश किया है।

विधेयक के बारे में -

- **उद्देश्य**: व्यक्तियों को उनके चेहरे की विशेषताओं, आवाज और उपस्थिति पर कॉपीराइट जैसा नियंत्रण देकर डीपफेक तकनीक के दुरुपयोग को रोकना।
- **दृष्टिकोण**: सहमति-आधारित सुरक्षा की शुरुआत की गई है, जिससे व्यक्ति की अनुमति के बिना डीपफेक सामग्री को साझा करना अवैध हो गया है।
- **प्रावधान**:
    - किसी व्यक्ति के चेहरे, आवाज या शारीरिक लक्षणों के वास्तविक डिजिटल पुनर्निर्माण को सार्वजनिक रूप से साझा करने पर रोक लगाता है।
    - इसमें गैर-मौखिक और तात्कालिक कलात्मक प्रदर्शन शामिल हैं जो पारंपरिक कॉपीराइट नियमों के अंतर्गत योग्य नहीं हो सकते हैं।
    - केवल मशहूर हस्तियों पर ही लागू नहीं होता बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को भी मिलता है, यहां तक कि उनकी मृत्यु के 50 वर्ष बाद भी।
    - संगीतकारों, अभिनेताओं और कलाकारों जैसे कलाकारों की डिजिटल नकल को लक्षित करता है।

भारतीय संदर्भ -

- भारत में डीपफेक के विरुद्ध कोई विशेष कानून नहीं है।
- न्यायालय गोपनीयता, मानहानि और प्रचार अधिकारों पर भरोसा करते हैं।
- दिल्ली उच्च न्यायालय ने अमिताभ बच्चन (2022) और अनिल कपूर (2023) जैसी हस्तियों को सुरक्षा प्रदान की।
- डेनमार्क के प्रस्तावित दृष्टिकोण के विपरीत, ऐसी सुरक्षा आम नागरिकों तक नहीं पहुंचाई जाती है।

स्रोत: Indian Express

ताप विद्युत संयंत्रों के लिए FGD मानदंडों में ढील

संदर्भ

पर्यावरण मंत्रालय ने ताप विद्युत संयंत्रों के लिए फ्लू गैस डिसल्फराइजेशन (FGD) प्रणालियों से संबंधित मानदंडों में ढील दी है।

इसके पीछे मूल कारण -

- **सल्फर डाइऑक्साइड (SO_2) के स्तर में गिरावट**: भारत में परिवेशी SO_2 सांद्रता में गिरावट देखी गई है।
    - 492 शहरों में किए गए मूल्यांकन में, केवल दो (देहरादून और कोलार) शहरों में SO_2 सीमा पार हुई।
    - भारत का वार्षिक SO_2 मानक (**50 µg/m³**) जापान (66), यूरोपीय संघ (52.4) और ऑस्ट्रेलिया (66) जैसे देशों की तुलना में सख्त है।
- **PM2.5 स्वास्थ्य प्रभावों में SO_2 की सीमित भूमिका**: वैज्ञानिक अध्ययनों से संकेत मिलता है कि SO_2 PM2.5 प्रदूषण में प्रमुख योगदानकर्ता नहीं है, जो स्वास्थ्य के लिए अधिक हानिकारक है।
    - FGD इकाइयों वाले और बिना FGD इकाइयों वाले शहरों में SO_2 के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं दिखता है, जो सीमांत सार्वजनिक स्वास्थ्य लाभ का संकेत देता है।
- **उच्च वित्तीय और पर्यावरणीय लागत**: FGD स्थापित करने की लागत अधिक है: **1.2 करोड़ रुपये प्रति मेगावाट**, जो सभी संयंत्रों के लिए लगभग 2.54 लाख करोड़ रुपये है।
    - मंत्रालय ने तर्क दिया कि इससे पीएम 2.5 के स्तर में केवल मामूली सुधार होगा, जिससे यह एक असंगत निवेश बन जाएगा।
- **भारतीय कोयले की संरचना**: भारतीय कोयले में सल्फर की मात्रा कम (0.5%) होती है, लेकिन राख की मात्रा अधिक होती है, जिसके परिणामस्वरूप स्वाभाविक रूप से अन्य देशों की तुलना में SO_2 उत्सर्जन कम होता है।
- **लक्षित विनियमन**: नई नीति के तहत, केवल 22% ताप विद्युत संयंत्रों (ज्यादातर ऐतिहासिक रूप से खराब वायु गुणवत्ता वाले शहरों के पास) को ही FGD स्थापित करना होगा।
    - यह लक्षित दृष्टिकोण उच्च प्रभाव वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है, तथा पर्यावरणीय प्राथमिकताओं से समझौता किए बिना लागत-प्रभावशीलता में सुधार करता है।

स्रोत: The Hindu

संपादकीय सारांश

STEM करियर में महिलाएं

संदर्भ

जैसे ही हम 15 जुलाई को **विश्व युवा कौशल दिवस** के रूप में मनाते हैं, भारत को अपने **STEM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) क्षेत्र में लैंगिक विरोधाभास** को दूर करने पर गंभीरता से काम करने की आवश्यकता है।

STEM में महिलाओं की भागीदारी का महत्व -

- **जनसांख्यिकीय लाभांश**: भारत की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है। सतत विकास के लिए इस प्रतिभा-संपदा का दोहन आवश्यक है।
- **जीडीपी को बढ़ावा**: मैकिन्से ग्लोबल इंस्टीट्यूट के अनुसार, 68 मिलियन और महिलाओं को काम करने में सक्षम बनाने से 2025 तक भारत के जीडीपी में 700 बिलियन डॉलर की वृद्धि हो सकती है। विश्व बैंक का अनुमान है कि 50% महिला श्रम बल भागीदारी दर जीडीपी वृद्धि को 1% तक बढ़ा सकती है।
- **नवाचार और विविधता**: STEM में विविध टीमें बेहतर समस्या-समाधान और नवाचार को बढ़ावा देती हैं - जो भारत की डिजिटल और तकनीकी आकांक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण है।
- **सामाजिक सशक्तिकरण**: आर्थिक सशक्तिकरण से महिलाओं को निर्णय लेने की अधिक शक्ति मिलती है, जिसका प्रभाव घरों, समुदायों और नीति निर्माण पर पड़ता है।
- **राष्ट्रीय लक्ष्यों के साथ तालमेल**: STEM में महिलाओं का समावेशन, विकसित भारत के दृष्टिकोण के साथ तालमेल बिठाता है, जिससे विकास समावेशी, न्यायसंगत और भविष्य के लिए तैयार हो जाता है।

STEM में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियाँ -

- **शिक्षा-रोजगार का अंतर**: STEM पाठ्यक्रमों में उच्च नामांकन के बावजूद, उद्योग की तत्परता, नेटवर्क या सहायक नीतियों की कमी के कारण नौकरी में सीमित परिवर्तन होते हैं।
    - उदाहरण के लिए, जबकि भारत के STEM स्नातकों में 43% महिलाएं हैं - जो प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे अधिक है - STEM कार्यबल में केवल 27% महिलाएं हैं।
- **कार्यस्थल पर लैंगिक पूर्वाग्रह**: तकनीकी भूमिकाओं को अक्सर "पुरुषोचित" माना जाता है, और कार्यस्थल महिलाओं के जीवन के चरणों (जैसे, मातृत्व, देखभाल) के प्रति अनिच्छुक या अनम्य रहते हैं।
- **शहरी-ग्रामीण विभाजन**: पीएलएफएस 2023-24 के अनुसार, शहरी एफएलएफपीआर 25.4% पर कम बनी हुई है, जो बढ़ती ग्रामीण भागीदारी (47.6%) के बावजूद औपचारिक नौकरी की बाधाओं को दर्शाती है।
- **सहायता प्रणालियों का अभाव**: मार्गदर्शन, जागरूकता और पारिवारिक सहायता का अभाव है, विशेषकर रूढ़िवादी और ग्रामीण समुदायों में।
- **सुरक्षा और गतिशीलता संबंधी चिंताएं**: अपर्याप्त परिवहन, कार्यस्थल सुरक्षा और स्वच्छता सुविधाएं महिलाओं को तकनीकी भूमिकाओं में प्रवेश करने या बने रहने से रोकती हैं।

समाधान और आगे की राह -

- **नीति सुदृढ़ीकरण और लक्षित हस्तक्षेप**: एनईपी 2020 शिक्षा में जीवन कौशल और व्यावसायिक प्रशिक्षण को एकीकृत करता है।
    - केंद्रीय बजट 2025-26 में जेंडर बजट को बढ़ाकर 8.8% कर दिया गया और टर्म लोन, राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान और डिजिटल कौशल प्लेटफॉर्म की शुरुआत की गई।
- **परिवर्तन एजेंट के रूप में उद्योग**: उद्योगों को निष्क्रिय भर्तीकर्ताओं से सक्रिय सक्षमकर्ताओं की ओर परिवर्तित होना होगा - मार्गदर्शन, इंटर्नशिप और कार्यस्थल सुधार के माध्यम से।
    - कक्षा से कैरियर तक पाइपलाइन बनाने के लिए शैक्षिक संस्थानों के साथ साझेदारी करना।

- **सामुदायिक सहभागिता एवं व्यवहार परिवर्तन**: संयुक्त राष्ट्र महिला वेस्टेम कार्यक्रम जैसी पहल परिवारों को शामिल करती है, महिला रोल मॉडल को बढ़ावा देती है, तथा मानसिकता में बदलाव लाने के लिए कार्यस्थल सुरक्षा सत्र आयोजित करती है।
- **बुनियादी ढांचे और सुरक्षा में वृद्धि**: सुरक्षित परिवहन, लचीले कार्यस्थल और लिंग-संवेदनशील नीतियां STEM क्षेत्रों में महिलाओं को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- **जागरूकता और मार्गदर्शन**: आत्मविश्वास और अवसरों की दृश्यता में सुधार के लिए राष्ट्रीय मार्गदर्शन नेटवर्क, उद्योग बूटकैंप और कैरियर परामर्श शुरू करना।

स्रोत: **The Hindu**

भारत को अपनी कृषि का व्यापार नहीं करना चाहिए

संदर्भ

जैसे-जैसे अमेरिकी टैरिफ की समयसीमा नज़दीक आ रही है, भारत व्यापार समझौते पर ज़ोर दे रहा है। हालाँकि, कृषि पर अमेरिकी माँगों ने भारत में चिंताएँ पैदा कर दी हैं, खासकर किसानों की आजीविका और बाज़ार पहुँच को लेकर।

भारत के साथ व्यापार समझौते पर अमेरिकी दृष्टिकोण -

- **एकतरफा रियायतें**: भारत अमेरिकी औद्योगिक वस्तुओं पर टैरिफ उन्मूलन और कृषि बाजारों को सीमित रूप से खोलने की पेशकश कर सकता है।
    - अमेरिका की प्रतिक्रिया कमजोर है - संभवतः यह टैरिफ उपचार का वादा करने वाले एक गैर-बाध्यकारी पत्र तक सीमित है, न कि दृढ़ प्रतिबद्धताओं तक।
- **जबरन खरीद**: इस समझौते में अमेरिकी वस्तुओं की बहु-अरब डॉलर की अनिवार्य खरीद शामिल हो सकती है: एलएनजी, तेल, विमान, रक्षा उपकरण और कृषि वस्तुएं।
    - यह अमेरिका द्वारा अन्य देशों (जैसे, ब्रिटेन, वियतनाम) के साथ किए गए सौदों की तरह है, जहां क्रय प्रतिबद्धताएं दबाव में की गई थीं।
- **नियामक मांगें**: अमेरिकी कंपनियों के लिए व्यापार करने में आसानी:
    - भारत के सरकारी खरीद बाजार तक पहुंच।
    - पेटेंट संरक्षण का कमजोर होना।
    - अमेज़न और वॉलमार्ट जैसी दिग्गज कंपनियों के लिए ई-कॉमर्स मानदंडों में ढील दी गई।
    - तकनीकी कंपनियों द्वारा अप्रतिबंधित डेटा स्थानांतरण।
- **समझौते के बावजूद टैरिफ की धमकी**: ट्रम्प ने धमकी दी है:
    - सभी ब्रिक्स देशों पर 10% टैरिफ।
    - रूस (भारत का शीर्ष आपूर्तिकर्ता) से तेल खरीदने वाले देशों पर 500% टैरिफ।
    - असंबंधित मुद्दों पर आधारित टैरिफ (उदाहरण के लिए, X पर कार्रवाई के बाद ब्राज़ील के टैरिफ)।
    - समझौता टैरिफ सुरक्षा की गारंटी नहीं देता है।

देश/क्षेत्र	अमेरिकी मांगें	साझेदार देश की चिंताएँ	स्थिति	संभावित परिणाम
यूरोपीय संघ	अमेरिकी एलएनजी, गोमांस, विमान की गारंटीकृत खरीद; अमेरिकी ऑटोमोबाइल और स्टील पर कम टैरिफ; यूरोपीय संघ के कृषि बाजारों तक व्यापक पहुंच	यूरोपीय संघ के किसानों और ऑटो क्षेत्र को नुकसान; CBAM को नहीं छोड़ा जाएगा; आशंका है कि ट्रम्प फिर भी टैरिफ लगा सकते हैं	बातचीत जारी है, लेकिन तनावपूर्ण है। ट्रंप ने 30% टैरिफ़ की धमकी दी है	ढुलमुल
जापान	मांस, एलएनजी, विमान की खरीद की गारंटी; चावल और सरकारी अनुबंधों तक	राइस राजनीतिक रूप से संवेदनशील हैं; घरेलू स्तर पर विरोध का खतरा;	राजनीतिक प्रतिरोध के कारण वार्ता धीमी	कोई व्यापक समझौते की उम्मीद नहीं;

देश/क्षेत्र	अमेरिकी मांगें	साझेदार देश की चिंताएँ	स्थिति	संभावित परिणाम
	पहुंच; ऑटो मानकों में ढील	आशंका है कि यह समझौता भविष्य में अमेरिकी टैरिफ को नहीं रोक पाएगा		प्रतीकात्मक संबंध संभव
दक्षिण कोरिया	अमेरिकी मांस और एलएनजी के लिए अधिक शुल्क-मुक्त पहुंच; खाद्य सुरक्षा और ऑटो नियमों में ढील; अमेरिकी विमानन को समर्थन	किसानों को नुकसान की आशंका; चिंता कि समझौते के बाद ट्रम्प और अधिक मांग करेंगे; मौजूदा मुक्त व्यापार समझौते के बावजूद विश्वास की कमी	बातचीत जारी, लेकिन कोई प्रगति नहीं	संभावित समझौता ज्ञापन या संकीर्ण सौदा
ऑस्ट्रेलिया	अमेरिकी दवाओं, धातुओं, मांस पर टैरिफ में कटौती; कृषि और दुर्लभ मृदाओं तक अधिक पहुंच की अनुमति; बड़े अमेरिकी खरीद (मांस, ऊर्जा, रक्षा) के लिए प्रतिबद्ध	अमेरिकी टैरिफ वृद्धि पर नाराजगी; व्यापार घाटा; कोटा तय करने में अनिच्छा	बातचीत जारी, लेकिन समाधान नहीं	मिनी-डील की संभावना
चीन	अमेरिकी वस्तुओं पर कम टैरिफ; अमेरिकी ऊर्जा और विमान खरीदने की प्रतिबद्धता; सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, डिजिटल और सब्सिडी में सुधार	राजनीतिक मांगों का कड़ा विरोध; रणनीतिक स्वायत्तता खोने का डर; अमेरिका के प्रति गहरा अविश्वास	चुनिंदा क्षेत्रों में युद्धविराम की स्थिति नाजुक	कोई व्यापक समझौता नहीं, केवल गतिरोध
भारत	ऑटो, डेयरी, अनाज पर टैरिफ कम करें; जीएम फ़ीड की अनुमति दें; डेटा स्थानीयकरण को हटा दें; बड़े अमेरिकी	700 मिलियन किसानों पर प्रभाव; खाद्य सुरक्षा; डिजिटल संप्रभुता; समझौते के बाद	सीमित समझौते के लिए अंतिम चरण की वार्ता	अनिश्चित। आंशिक समझौते की संभावना, अमेरिका अभी भी 15% आधार

देश/क्षेत्र	अमेरिकी मांगें	साझेदार देश की चिंताएँ	स्थिति	संभावित परिणाम
	खरीद (तेल, गैस, रक्षा) के लिए प्रतिबद्ध हों	भी नए टैरिफ की आशंका		शुल्क लगा सकता है

भारतीय कृषि पर संभावित प्रभाव -

- **सब्सिडी वाले आयातों का जोखिम**: अमेरिका निम्नलिखित के लिए शून्य-शुल्क प्रवेश की मांग करता है:
  - डेयरी उत्पाद (पनीर, मट्ठा, दूध पाउडर) - **80 मिलियन से अधिक छोटे डेयरी किसानों** के लिए खतरा हैं।
  - जमे हुए चिकन पैर - **30 मिलियन अनौपचारिक पोल्ट्री श्रमिकों** को प्रभावित करते हैं।
  - गेहूं और चावल - घरेलू मूल्य में गिरावट का खतरा, दीर्घकालिक आयात पर निर्भरता।
- **जीएम फ़ीड और उत्पादों के लिए दबाव**: अमेरिका निम्नलिखित के लिए दबाव बना रहा है:
  - जीएम पशु आहार जैसे सोयामील और डीडीजीएस (डिस्टिलर्स ड्राइड ग्रेन्स विद सॉल्यूबल्स)।
  - जीएम तेल जैसे सोयाबीन तेल।
  - भारत ने वर्तमान में जीएम-मुक्त स्थिति और निर्यात बाजार (ईयू) की सुरक्षा के लिए जीएम फ़ीड पर प्रतिबंध लगा रखा है।
  - अमेरिकी स्व-प्रमाणन प्रणाली के कारण जीएम-मुक्त आयातों का सत्यापन कठिन हो जाता है।
- **क्षेत्रीय फसल प्रभाव**: अमेरिकी सेब पर शुल्क कटौती से कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के सेब किसानों को नुकसान हो सकता है।
  - सोया तेल पर टैरिफ कटौती से भारत के खाद्य तेल क्षेत्र को नुकसान हो सकता है, जिससे **60 लाख तिलहन किसान** प्रभावित होंगे।
- **वैश्विक बाजार में उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशीलता**:
  - ऐतिहासिक उदाहरण:
    - **2014-16 वैश्विक मूल्य दुर्घटना**: टैरिफ के बिना भारतीय किसानों को तबाह कर सकती थी।
    - **2005-08 मूल्य वृद्धि**: घाना, नाइजीरिया जैसे देशों को आयात पर निर्भरता के कारण नुकसान उठाना पड़ा।

निष्कर्ष

भारत पर एक "MASALA" सौदे के लिए दबाव डाला जा रहा है Mutually Agreed Settlement Achieved through Leveraged Arm-twisting यानी दबाव डालकर हासिल किया गया पारस्परिक रूप से सहमत समझौता, जिसमें लाभ नगण्य हैं लेकिन कृषि क्षेत्र के लिए जोखिम बहुत बड़े हैं। जब देश की 70 करोड़ से अधिक आबादी कृषि पर निर्भर है, तो भारत को ऐसे किसी भी समझौते से बचना चाहिए जो जीविका, खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण स्थिरता को खतरे में डालता हो। कृषि केवल व्यापार का विषय नहीं है — यह राष्ट्र की रीढ़ है।

स्रोत: **Businessline**